एकादशः पाठः

भारतीवसन्तगीतिः

3HW2BR

प्रस्तुत गीत आधुनिक संस्कृत–साहित्य के प्रख्यात कवि पं. जानकी वल्लभ शास्त्री की रचना 'काकली' नामक गीतसंग्रह से संकलित है। इसमें सरस्वती की वन्दना करते हुए कामना की गई है कि हे सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिससे मधुर मंजरियों से पीत पंक्तिवाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे–धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुञ्जार और नदियों का (लीला के साथ बहता हुआ) जल, वसन्त ऋतु में मोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गई यह गीतिका एक नवीन चेतना का आवाहन करती है तथा ऐसे वीणास्वर की परिकल्पना करती है जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जनसमुदाय को प्रेरित करे ।

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित–नीति–लीनाम्।
मधुर–मञ्जरी–पिञ्जरी–भूत–मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित–कोकिला–काकलीनाम् ।।1।।
निनादय .....।।

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ।।2।।
निनादय .....।।

ललित–पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम् ।।3।।
निनादय .....।।

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ।।4।।
निनादय .....।।

शब्दार्थाः

निनादय	–	गुंजित करो,बजाओ
मृदुम्	–	कोमल
गाय	–	गााओ
ललित–नीति–लीनाम्	–	सुन्दर नीति में लीन
मञ्जरी	–	आम्रपुष्प
पिञ्जरीभूतमालाः	–	पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ
लसन्ति	–	सुशोभित हो रही हैं
इह	–	यहाँ
सरसाः	–	मधुर
रसालाः	–	आम के पेड़
कलापाः	–	समूह
काकली	–	कोयल की आवाज
सनीरे	–	जल से पूर्ण
समीरे	–	हवा में
कलिन्दात्मजायाः	–	यमुना नदी के
सवानीरतीरे	–	बेंत की लता से युक्त तट पर
नताम्	–	झुकी हुई
मधुमाधवीनाम्	–	मधुर मालती लताओं का

ललितपल्लवे	–	सुंदर, मन को आकर्षित करनेवाले पत्ते
पुष्पपुञ्जे	–	पुष्पों के समूह पर
मलयमारुतोच्चुम्बिते	–	चन्दन वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किए गए
मञ्जुकुञ्जे	–	सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थान
स्वनन्तीम्	–	ध्वनि करती हुई
ततिम्	–	पंक्ति को, समूह को
प्रेक्ष्य	–	देखकर
मलिनाम्	–	मलिन
अलीनाम्	–	भ्रमरों के
सुमम्	–	पुष्प को
शान्तिशीलम्	–	शान्ति से युक्त
उच्छलेत्	–	उच्छलित हो उठे
कान्तसलिलम्	–	स्वच्छ जल
सलीलम्	–	खेल–खेल के साथ
आकर्ण्य	–	सुनकर

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) कविः वीणापाणिं किं कथयति ?

(ख) वसन्ते के लसन्ति ?

(ग) मधुमाधवीनां पंक्तिः कीदृशी अस्ति ?

(घ) अलीनां ततिः कीदृशी अस्ति ?

2.'क' स्तम्भे पदानि, 'ख' स्तम्भे तेषां पर्यायपदानि दत्तानि। तानि चित्वा पदानां समक्षे लिखत–

'क' स्तम्भः	**'ख' स्तम्भः**		**'ग' उत्तराणि**
(क) सरस्वती	(1) तीरे	=	.....
(ख) आम्रम्	(2) अलीनाम्	=	.....
(ग) पवनः	(3) समीरः	=	.....
(घ) तटे	(4) वाणी	=	.....
(ङ.) भ्रमराणाम्	(5) रसालः	=	.....

3. अधोलिखतानि पदानि प्रयुज्य संस्कृतभाषया वाक्यरचनां कुरुत –

(क) निनादय

(ख) मन्दमन्दम्

(ग) मारुतः

(घ) सलिलम्

(ङ.) सुमनः

4. प्रथमश्लोकस्य आशयं मातृभाषया लिखत –

5. अधोलिखितपदानां विलोमपदानि लिखत –

(क) कठोरम् – .....

(ख) कटु – .....

(ग) शीघ्रम् – .....

(घ) प्राचीनम् – .....

(ङ. नीरसः – .....

7. पाठेऽस्मिन् वीणायाः चर्चा अस्ति। अन्येषां पञ्चवाद्ययन्त्राणां चित्रं रचयित्वा तेषां नामानि लिखत।

योग्यताविस्तारः

अन्वय और हिन्दी भावार्थ

अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललितनीतिलीनां गीतिं मृदुं गाय।

हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ, सुन्दर नीतियों से परिपूर्ण गीत का मधुर गान करो।

इहवसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति। ललित–कोकिलाकाकलीनां कलापाः (विलसन्ति)। अये वाणि ! नवीनां वीणां निनादय।

इस वसन्त में मधुर मंजरियों से पीली हो गई सरस आम के वृक्षों की माला सुशोभित हो रही है। मनोहर काकली (बोली, कूक) वाली कोकिलों के समूह सुन्दर लग रहे हैं। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दमन्दं वहति (सति) माधुमाधवीनां नतां

पङ्क्तिम् अवलोक्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

यमुना के वेतस लताओं से घिरे तट पर जल बिन्दुओं से पूरित वायु के मन्द मन्द बहने पर फूलों से झुकी हुई मधुमाधवी लता को देखकर, हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे मञ्जुकुञ्जे मलय–मारुतोच्चुम्बिते स्वनन्तीम् अलीनां मलिनां ततिं प्रेक्ष्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

मलयपवन से स्पृष्ट ललित पल्लवों वाले वृक्षों, पुष्पपुंजों तथा सुन्दर कुंजों पर काले भौंरों की गुंजार करती हुई पंक्ति को देखकर, हे वाणी नवीन वीणा को बजाओ।

तव अदीनां वीणाम् आकर्ण्य लतानां नितान्तं शान्तिशीलं सुमं चलेत् नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के नितान्त शान्त सुमन हिल उठें, नदियों का

मनोहर जल क्रीडा करता हुआ उछल पड़े। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।